हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

कर्क लग्न में राजयोग

श्रीमती प्रज्ञा मनुभाई तन्ना

उद्देश्य –

मनुष्यजीवन की सार्थकता धर्म–अर्थ–काम–मोक्षादि चतुर्विध पुरुषार्थ की सिद्धि में होती है। किन्तु कलयुग में धर्म से अधिक अर्थ का महत्व बढ़ गया हे। हर मनुष्य को पैसा और पावर की आकांक्षा होती जा रही है। इस जीवनकाल में कौन स जातक कितना सफल और समृद्ध होगा यह ज्योतिषशास्त्र के राजयोग विषयक भविष्य कथन से विदित हो कसता है।

ज्योतिष शास्त्रोक्त मेषादि द्वादश लग्नों में से कौन से लग्नवाली कुण्डली में राजयोग की कैसी संभावना होती है यह जानने के लिए मैंने महर्षि पाराशर के मतानुसार ग्रहों के केन्द्र–त्रिकोण के स्वामीत्व के आधार पर द्वादश लग्नों का अध्ययन करके कर्क लग्न में राजयोगों की संभावना अधिकतर पाई है। कर्क लग्न में ऐसी संभावना क्यो हैं ? उसे जानने के उद्देश्य से यह शोधपत्र प्रस्तुत किया है।

सारांश –

ज्योतिषशास्त्रमें वर्णित किसीभी योगकी समीक्षा एवं विश्लेषण ज्योतिष के स्थापित नियमों के आधार पर होते हैं। किंसी भी कुडली में विविध योग प्रायः लग्न या चन्द्र से योग बनानेवाले घटक पर आधारित होते हैं। कहीं पर केवल ग्रहों के सम्बन्ध से, कहीं पर ग्रह–भावों के संबंध से, कही पर ग्रह–राशियों के संबंध से, तो कहीं पर ग्रह–राशि एवं भावों के संबंध विशेष से योग बनते हैं।

यहाँ मैने मेषादि लग्नों में योगकारक ग्रहों का अध्ययन करके राज्यकारक सूर्य–गुरु–मंगल के काकरकत्व के आधार पर कर्कलग्न में राजयोग की संभावना अधिकर पाई है। राजनीति में प्रायःकर्कलग्न के जातक अधिकतर सफल पाए जाते हैं, जिन्हें विविध उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत करने की कोशिश भी की है।कर्क
लग्न मे राजनीति की विशेष संभावना पाई जाती है जिसे जानने का प्रयास इस शोधपत्र में किया गया है।

ज्योतिषशास्त्र का परिचय :–

समस्त संस्कृतवाङग्मयका मुख्य आधार चारों वेद है। वेदोंके अध्ययनके लिए शिक्षा–कल्प–व्याकरण–निरुक्त–छन्द–ज्योतिषादि षड्वेदांगका अभ्यास आवश्यक हैं ।

ज्योतिषशास्त्रको षड्वेदांगोमें चक्षु स्वरूप कहा गया हैं। ज्योतिषशास्त्रके मुख्यतया तीनविभाग हैं ३

सिद्धान्त – संहिता – होरा ।

होराशास्त्र ही फलित ज्योतिषका मुख्य विभाग हैं। संसार व्यहवारके लिए महूर्त–काल–दिशा–तिथि–योग–वारादिज्ञान ज्योतिषशास्त्र से ही प्राप्त होता हैं । तथा सूर्यचन्द्रताराग्रहनक्षत्रादि ज्योर्तिपिंडोंके स्वरुप अवस्था गति युति स्थितिके कारण बनते हुए ज्योतिषयोगोंका मनुष्यजीवन पर क्या प्रभाव पडता हैं यह इस शास्त्रका मुख्य विषय हैं ।

राजयोग परिचय :–

मनुष्यके जन्मकालिक ग्रहोंकी खगोलीय स्थितिदर्शक जन्मकुण्डलीमें ग्रहोंके संबंधानुसारेण विविध योग धटते है जिनका शुभाशुभ फल उसे प्रदान करते हैं उनमें से जो योग राजतुल्य–ऐश्वर्य–वैभव–सुख–धन–पराक्रम–कीर्ति–सत्ता–शासन–समृद्धि–भूमिसुख–गजाश्वाादि वाहनसुख देता है उसे राजयोग कहते हैं।

ISSN : 2582-9092

राजयोग कारकग्रह –

श्री पराशर के मतानुसार केन्द्र–त्रिकोण के स्वामी के संबंध से कुंडली में राजयोग निर्मित होते हैं। चाहे वह ग्रह नैसर्गिक पापग्रह ही क्यों न हो ? किन्तु यहॉ ग्रहों का अन्य भावों पर स्वामित्व भी महत्वपूर्ण होता हे। ग्रह जिस जिस भावों के स्वामी होते हैं उस उस भावों के गुणों की भी असर घटित योगों पर होती है। प्रत्येक भाव या भावेश जो किसी योगकर्ता ग्रह से संबंधित होता है उनका प्रभाव उस घटित योग के फल का उस पर प्रभाव पड़ता ही है। यदि कोइ पाप ग्रह एक शुभ स्थानका और एक अशुभ स्थानका स्वामी है तो वह शुभ नहीं होता ।

" शुभाशुभौ केवलो तु स्थानानुगुणपाकदौ

पापकुजोकर्मनाथोयदिनो पञ्चमाधिपः
कर्क लग्ने कर्मनाथः कुजः सत्फलदायकः।। 1

मंगल वा पापग्रह यदि दशमेश हो और साथमेंपंचमभावका भीस्वामी होतोशुभहोता है । दशम भावमें मंगलकीराशि. केवलकर्कएवंकुम्भलग्नमेंही पड़ती है । कर्कलग्नमें मंगल केन्द्र त्रिकोण दोनोंका स्वामी हो गया इसलिए वह शुभ हो. गया किन्तु कुम्भलग्नमें मंगल दशम तथा तृत्तीय का स्वामी होता है किन्तु त्रिकोणाधिप नहीं है इस कारण वह पापी ही रहेगा

इसलिए जो ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों शुभ स्थानों का स्वामी है वह परम शुभ एवं राजयोग कारक होता है यदि वह स्वयं शुभ स्थान में स्थित है।

"कोणेशत्वे यदैकस्य केन्द्रेशत्वं च जायते।
केन्द्रे कोण स्थितौ वाऽसौ विशेषाद्योगकारकः।" 2

विश्लेषणः–

केन्द्र–दशमभाव –

कुण्डली के चारों केन्द्र में दशमभावको बृहत्पाराशर होराशास्त्र में सबसे बली कहा गया है। उसकी संज्ञा ही राज्य भाव मानभाव आज्ञा इत्यादि है।

"राज्यपदादव्यापारमुद्रानृपमानराज्यपितृमहत्पदाप्तिपुण्याज्ञाकीर्तिवृष्टि प्रवृत्ति प्रवास कर्म जीव जानुपूर्त्यादि चिन्तयम्।" 3

दशमभाव से ही राजसम्मान, व्यपार, धन, उच्च पदप्राप्ति, राज्य, पिता, पुण्य, आज्ञा, सत्ता कीर्ति, प्रवृत्ति कर्म, आदि देखे जाते हैं अतः राजयोग का विचार करें तो सर्वाधिक महत्वपूर्ण दशमभाव होता है।

त्रिकोण भाव –

कुण्डली में त्रिकोणभाव, लग्न–पंचम एवं नवम भाव सर्वाधिक शुभ माने गए है। जब केन्द्र त्रिकोण के स्वामी का संबंध होता हे तो केन्द्रेश को भी शुभत्व प्राप्त होता है, ऐसी युति राजयोग कारक कहलाती है।

"केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावापि स्वयं।
सम्बन्धमात्राद् बलिनो भवेतां योगकारकौ।" 4

यदि केन्द्र त्रिकोण के स्वामी स्वयं नीच शत्रुक्षेत्री अस्त आदि दोषयुक्त भी हो परंतु परस्पर संबंध मात्र से योगकारक कहलाते हैं।

मेषादि लग्नों में योगकारक ग्रह –

मेषादि द्वादश लग्नों में दशम और त्रिकोण दोनों भाव के स्वामी एक ही ग्रह हो ऐसा केवल तीन लग्न में

ISSN : 2582-9092

संभावित होता है और उस पर भी वह योगकारक ग्रहदशमभाव में स्वक्षेत्रका एवं दिग्बली भी हो वह केवल कर्क लग्न में संभव होता है। अन्य लग्नों में या तो दशमेश नही होता है या तो त्रिकोणेश नहीं होता है। जैसे –

लग्न	**दशमेश**	पंचमेश	नवमेश	उच्चस्थान	दिग्बल
मेष	शनि	सूर्य	गुरु		
वृषभ	**शनि**	बुध	**शनि**	षष्ठभाव	सप्तमभाव
मिथुन	गुरु	शुक्र	शनि		
कर्क	मंगल	मंगल	गुरु	सप्तमभाव	दशमभाव
सिंह	शुक्र	गुरु	मंगल		
कन्या	बुध	शनि	शुक्र		
तुला	चन्द्र	शनि	बुध		
वृश्चिक	सूर्य	गुरु	चन्द्र		
धनु	बुध	मंगल	सूर्य		
मकर	**शुक्र**	**शुक्र**	बुध	तृतीयभाव	चतुर्थभाव
कुम्भ	मंगल	बुध	शुक्र		
मीन	गुरु	चन्द्र	मंगल		

उपरोक्त कोष्ठक से विदित होता है कि –

1. वृषभ लग्न में शनि दशमेश एवं नवमेश भी हैं। दशम भाव में शनि, कुम्भ राशि में मूल–त्रिकोण के होते हें पर उसका उच्चस्थान छठें भाव में तुला राशि में होता है और शनि दिग्बली सप्तम में होते हैं।
2. मकर लग्न मेंशुक्र की मूलत्रिकोण राशि तुला दशम में होती है। पर उसकी उच्चराशि मीन तृतीय भाव में पड़ती है और शुक्र दिग्बली चतुर्थभावमें होता है।
3. केवल कर्क लग्न में मंगल की मूलत्रिकोणराशि मेष दशमभाव में तथा उच्चराशि मकर सप्तमभाव केन्द्र में ही पड़ती है। पर च मंगल दशम भाव में दिग्बली भी होते हैं। इसलिए मंगलको कर्क लग्न में विशिष्ट बल प्राप्त होता है। लघुपाराशरी ग्रन्थ में कहा गया है कि –

"कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता शुभकारिता।
त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशत्वमात्रतः।" 5

ISSN : 2582-9092

मंगल का कारकत्व –

मंगल शक्ति का द्योतक है। ग्रहों में सेनापित कहा गया है। सर्वार्थचिन्तामणि में लिखा गया है कि

"पराक्रमविजयविख्यातिसंग्रामसाहससेनापत्यदण्डनेतृत्वखडगपरश्वधकुन्तकुठारशतघ्नी भिन्दिपालधनुर्बाणनैपुण्य **धृतिःक्रान्ति गाम्भीर्य कामक्रोध शत्रुवृद्धि आग्रहावग्रह परापवादस्वतन्त्रधातृभूकारकः कुजः।" 6**

अर्थात् मंगल को पराक्रम विजय, ख्याति, संग्राम, साहस, सेनापति, सामन्त, खड्ग, नेतृत्व, फर्सा, धनुषबाण, निपुणता, धैर्य शतघ्नी, काम–क्रोध, शत्रुबुद्धि, आग्रह कारक स्वतंत्रता एवं भूमि का कारक ग्रह कहा गया है।

गुरु का कारकत्व –

गुरु कर्क लग्न में भाग्येश होता है। उसका कारकत्व श्री वेंकटेश्वर जी ने सर्वार्थ चिन्तामणि ग्रन्थ में बताया है कि – वापी, सवारी, मन्त्र, राजतन्त्र, निष्ठा, हाथी–घोड़ा, पालकी, वेदों का ज्ञान, शास्त्रों का ज्ञान, कर्म, पुत्र, सम्पत्ति, जीवनोपाय, कर्मयोग, सिंहासनादि का कारक गुरु होता है।

सूर्य कारकत्व –

ग्रहों के राजा सूर्य कर्क लग्न में राज्यभाव में उच्च के एवं दिग्बली भी होते हैं। भाग्यभाव में मीनराशि सूर्य उच्चाभिलाषी होते है। ऐसे सूर्य का विशिष्टफल कहा गया है। फलदीपिका ग्रन्थ में सूर्य के लिए कहा गया है कि –

"शैवों भिषङ्नृपतिरध्वज कृत्प्रधानी –
व्याघ्रो मृगो दिनपतेः किलः चक्रवाकः।" 7

कुण्डली में सूर्य बलयुक्त होने से जातक शिवभक्त राजा, प्रशासक, चिकित्सक, यज्ञादिक्रर्मों को कराने वाला, सिंह, मृग, वक्र बलादि का कारक एवं प्रधान होता है।

कर्क लग्न में संभावित राजयोग–

कर्कलग्नकुण्डलीमें भावेशग्रह

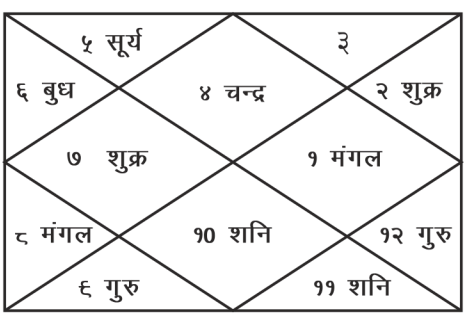

जैसे पूर्व में कहा गया है कि 12 लग्नों में कर्क लग्न में केन्द्र–त्रिकोण का स्वामी मंगल प्रबल राजयोग कारक होता हे। चन्द्र स्वयं लग्नेश और बृहस्पति भाग्येश होते हैं। अन्य केन्द्रों के स्वामी चतुर्थेश शुक्र एवं सप्तमेश शनि होते हैं। अतः इनसे निर्मित कतिपय राजयोग कर्कलग्न में प्रभावकारक होते हैं। जैसे –

केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश मंगल कर्क लग्न में दशमभाव में मेषराशि में स्वगृही तथा सप्तमभांवमें मकरराशि में उच्च के होने से 'रुचक' नामक पंचमहापुरुषयोग घटित होता है।

जातः श्रीरुचके बलान्बितवपुः श्रीकीर्तिशीलान्वितः
शास्त्री मन्त्रजपाभिचाारकुशलो राजाऽथवात्समः।
लावण्यारुणकान्तिकोमलतनुस्त्यागीजितारिर्घनी
सप्तत्यब्दमितायुषा सह सुखं सेनातुरैंाधिपः।। 8

ISSN : 2582-9092

रुचकयोग में उत्पन्न जातक का तनु बलवान और सौष्ठवयुक्त होता है। वह धन, कीर्ति, शील से युक्त शास्त्रज्ञ, मन्त्रजाप, अभिवार में कुशल,राजा अथवा राजसमान धनवान, लावण्य और लालिमा युक्त कोमल तनुधारी, सुखी सेना और अश्वादि से युक्त 70 वर्ष की आयु भोगता है।

"नभसि शुभखगे वा तत्पतौ केन्द्रकोणे बलिनि निजगृहोच्च कर्मगे लग्ने वा।
महितपृथुयशाः स्याद्धर्मकर्मप्रवृत्ति नृपतिशदृशभाग्यं दीर्घमायुश्च तस्च।।" 9

दशमें भाव में शुभग्रह स्थित हो बली दशमेश स्वगृही वा उच्च होकर केन्द्र–त्रिकोण में हो अथवा लग्नेश दशम भाव में स्थित हो ऐसे येाग में उत्पन्न जातक धार्मिकवृत्ति और बुद्धिवाला, सत्कीर्तियुक्त, राजा के समान भाग्यशाली और दीर्घायु होता है।

कर्क लग्न में चन्द्र स्वयं शुभ होकर दशमे मेषराशि में, दशमेष मंगल स्वयं दशमेश स्वग्रही होकर या सप्त में मकरराशि में उच्च के होकर स्थित होने से ये योग घटित होता है।

उर्जस्वी जनवल्लभो दशमे सूर्य कुजे वा महत्।
कार्य साधयति प्रतापबहुलं खेशश्च सुस्थो यदि।। 10

दशमभाव में यदि सूर्य वा मंगल स्थित हो तो जातक अनंत उर्जायुक्त और सर्वजनप्रिय होता है। यदि दशमेश शुभस्थान में हो तो जातक स्वपराक्रम से अनेक महान कार्यों की साधने वाला होता है।

दिवाकरे मीनग्रहोपयाते कुलीरलग्ने शशिनि क्षितिशः। 11

जिस जातक के कर्क लग्न में चंद्रमा हो और मीनराशि के सूर्य हो वैसा जातक राजा होता है। सत्ता कारक सूर्य उच्चाभिलाषी होकर त्रिकोण में हो तो नीचकुलोत्पन्न जातक भी समृद्ध राजा होता है। एसी स्थिति में कर्क लग्न में मान का सूर्य नवमें रहने से उच्चाभिलाषी होता है और राज्यभाव में केन्द्र में जानेवाला भी होगा।

उच्चाभिलाषुकः सूर्यसिथतकोणस्थो यदा भवेत्।
अपि नीचकुलो जातो राजा स्याद्वनपूरितः।। 12

कुण्डली में भाग्येश ग्रह परमोच्च होकर या मुलत्रिकोण राशि के होकर केन्द्र भाव में सिति होकर और लग्नेश भी बली हो तो लक्ष्मी येाग उत्पन्न होता है। श्री वैद्यनाथ ने जातकपरिजात ग्रन्थ में उसका उत्कृष्ट फल कहा गया है।

गुणाभिरामो बहुदेशनाथो विद्यामहीकर्तिरनैंरूपः।
दिगन्तविश्रान्तनृपालबन्धो राजाधिराजा बहुदारपुत्रः।। 13

कर्क लग्न में यदि चन्द्रमा हो तथा उच्च का मंगल मकरराशि के सप्तमभाव में हो तो राजयोग उत्पन्न होता है। कर्कटे जायमानस्य चन्द्रो लग्ने यदि

मकरस्थो भवेत्भौमः राजयोग उदीरितिः।। 14

सारावली में कल्याण वर्मा के मतानुसार कर्करशि के दशमें अंश में चन्द्रमा स्थित होकर हो तो वह कुण्डली का जातक सदा ही राजा होता है।

कुम्भस्य पचदशके भागे चन्द्रः स्थितो महीपालम्।
कर्कस्य च दशमें करोति पुरुषं सदा प्रभवे।। 15

यदि कर्क राशि के पांचवे अंश में चन्द्र व गुरु स्थित हो तो मनुष्य जिस प्रकार राजा सूर्य है उसी तरह अजातशत्रु राजा होता है। यथा–

कर्कटके शशिजीवौ पचसु भागेषु संस्थितौ कुरुत।
भूमिपतिमप्रधृष्यं रविरिव सर्वग्रहगणस्य।। 16

ISSN : 2582-9092

भावार्थ रत्नाकार में कहा गया है कि

कर्कटे जायमानस्य चन्द्रजीवौ तु लग्नगौ।
राजयोग इति प्रोक्तः भाग्यवान्कीर्तिमान्भवेत्।। 11

कर्क लग्न में यदि चन्द्र, बुध स्थित हो तो जातक भाग्यशाली कीर्तिमान एवं राजयोगी होता है। और कर्क लग्न में गजकेसरी योग भी घटित होता है। क्योंकि यहाँ चन्द्र स्वग्रही स्वयं लग्नेश और उच्च के गुरु स्वयं भाग्येश होकर केन्द्र–त्रिकोणाधिपति का संबंध बनाते है। जो श्रेष्ठ राजयोगकारक होते हैं।

"प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवती स्वमन्दिरस्थो निजतुंगयाताः।
कुजार्कजार्कामरराजपूज्या केन्द्रस्थिताः कारकसंज्ञिताश्च।।18

यदि कर्क लग्न में चन्द्र हो और स्वोच्चराशि के होकर मंगल शनि, सूर्य तथा गुरु केन्द्र में हो तो यह परस्पर कारक योग होता है। कर्क लग्न में उक्त स्थानों में ग्रह दिग्बल भी होते हैं।

सारावली ग्रन्थ में इस योग का फलादेश करते हुए कल्याण वर्मा ने कहा है कि जिस कुण्डली में पूर्वोक्त कारक ग्रहयोग वह नीचवंशोत्पन्न जातक तो भी निःसन्देह राजा होता है।

रुचकभद्रहंसकारकमालवाः सशशका इति पच च परकीर्तिता।
स्वभवनोच्चगतेषु चतुष्टये क्षितिसुतादिषु तान् क्रमशो वदेत्।।19

प्रसिद्ध पंचमहापुरुष योगों में से कर्क लग्न में उच्च के गुरु से हंसयोग सप्तम एवं दशमें मंगलस्थिति से रुचकयोग चतुर्थ एवं सप्तमस्थानों में शनि स्थित से शशयोग तथा चतुर्थ में शुक्रस्थिति से मालव्य योग संभावित होते हैं।

कर्क लग्नके जातक की सूची –

कर्क लग्न में अनेक राजयोग संभावित हैं। यदि कर्क लग्न में उत्पन्नऐसे भाग्यवान राजयोगी जातकों का उदाहरण देखें तो श्रीमती इन्दिरागांधी, जवाहरलाल नेहरू, राजा विक्रमादित्य, प्रिन्स चार्ल्स, श्री वी.पी सिंह, सरदार पटेल, मायावती, के.आर. नारायणन, मेनका गांधी, के. करुणानिधि, स्वामी शिवानन्दजी, जयप्रकाशनारायण, श्रीराम शर्मा, मेनका गाँधी, सोनिया गाँधी, चन्द्रास्वामी, मदनमोहन मालवीयाजी,
श्री अरिविन्द, श्री रामानुजाचार्यजी, राजकपूर, कैसर जर्मन, फ्रांसिस जोसिफ, इजिप्त सम्राट अब्बास, नागपुर के राजा भोंसले, निजाम हैदराबादी, महाराज कोटा, ज्योज बुश, जमशेदजी टाटा, जैसे अनगिनत नाम हैं।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त कथनोंसे यह निस्सरित होता है किमेषादि लग्नों में राजयोगका विमर्श करे केन्द्र–त्रिकोण के स्वामीयोंके सम्बन्धसे घटनेवाले राजयोगकी बलवतर शक्यता कर्कलग्नकी कुण्डलीमें होती है क्योंकि वहाँ केन्द्र–त्रिकोण का स्वामी शक्तिद्योतक मंगल दशमभावमें स्वगृही एवं दिग्बली होकर विशिष्टयोगकारक बनता है, लग्नेश चन्द्र भी एक ही स्थानका स्वामी होनेसे पूर्णशुभफल देता है, भाग्येश गुरु भी लग्नमें चन्द्रके साथ उच्चस्थ हो तो उत्तम गजकेसरीयोग घटित होता है , सूर्यभी राज्यभाव में उच्च के एवं दिग्बली होकर परम योगकारक बनता हैं।
इस तरह कर्कलग्नकी कुण्डली में राजयोगकी संभावना अधिकतम होती है । अस्तु ।

ISSN : 2582-9092

सन्दर्भ ग्रन्थ

क्रमांक	सन्दर्भ ग्रन्थ /पृष्ठ	अध्याय/श्लोक	प्रकाशन	लेखक	टीकाकार
१	त्रिफलाज्योतिष १०	अ. १/६	मोतीलाल बनारसीदास–वाराणसी	संकलन	पं.गोपेशकुमारओझा
२	बृहत्पाराशरहोराशास्त्र/१७०	अ३५/१२	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री पराशरजी	पं पद्मनाभ शर्मा
३	जातकतत्त्वम/३८७	अ१०/०१	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री महादेव पाठक	डॉ.हरिशंकर पाठक
४	लघुपाराशरी/६२	अ. ३/२	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री पराशरजी	डॉ.सुरकन्त झा
५	लघुपाराशरी/५८	अ. २/६	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री पराशरजी	डॉ.सुरकन्त झा
६	सर्वार्थचिन्तामणि/४७६	अ. १८/३	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री वेङकटेश शर्मा	आचार्य गुरुप्रसाद गौड
७	फलदीपिका/४०	अ. २/१७	मोतीलाल बनारसीदास–वाराणसी	श्री मन्त्रेश्वर	पं.गोपेशकुमारओझा
८	जातकपरिजात /३२८	अ. ७/५५	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री वैद्यनाथ	डॉ.हरिशंकर पाठक
९	फलदीपिका/३१०	अ. १६/२८	मोतीलाल बनारसीदास–वाराणसी	श्री मन्त्रेश्वर	पं.गोपेशकुमारओझा
१०	फलदीपिका/३१०	अ. १६/२७	मोतीलाल बनारसीदास–वाराणसी	श्री मन्त्रेश्वर	पं.गोपेशकुमारओझा
११	जातकपरिजात/३२६	अ. ७/६0	चौखम्बा,सुरभारती–वाराणसी	श्री वैद्यनाथ	डॉ.हरिशंकर पाठक
१२	मानसागरी /२३५	अ. ४/६६	श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार–इलाहाबाद		श्री अनूप मिश्र
१३	भावार्थ रत्नाकार/४१	श्लोक–१०	रंजन पब्लिकेशन्स	श्री रामानुजाचार्य	श्री जगन्नाथ भसीन
१४	सारावली/४९६	अ.–३५/१५६	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी	श्री कल्याण वर्मा	डॉ.सुरकान्त झा
१५	सारावली/४९७	अ.–३५/१६३	चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी	श्री कल्याण वर्मा	डॉ.सुरकान्त झा
१६	भावार्थ रत्नाकार/४०	श्लोक–१०	रंजन पब्लिकेशन्स	श्री रामानुजाचार्य	श्री जगन्नाथ भसीन
१७	मानसागरी /२१६	अ. ४/०२	श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार–इलाहाबाद		श्री अनूप मिश्र
१८	फलदीपिका/१०६	अ. ६/१	मोतीलाल बनारसीदास–वाराणसी	श्री मन्त्रेश्वर	पं.गोपेशकुमारओझा

शोधच्छात्रा
बरोडा–संस्कृत–महाविद्यालय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
वडोदरा, गुजरात